

श्रौतजन्म पुं. (तत्.) वैदिक संस्कारों से होने वाला (दूसरा) जन्म, उपनयन, यज्ञोपवीत संस्कार वि. यह संस्कार होने पर ही द्विज उपाधि मिलती है अन्यथा शूद्र ही रहता है- जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।

श्रौतमार्ग पुं. (तत्.) 1. वेदों में बतलाई गई जीवन पद्धति, वैदिक मार्ग 2. कान।

श्रौतयज्ञ पुं. (तत्.) वह यज्ञ जिसका विधान वेद, वेदांग (कल्प सूत्र), ब्राह्मण ग्रंथों या आरण्यकग्रंथों के अनुसार हो।

शलक्ष्ण-पाशर्व पुं. (तत्.) भूगर्भ. किसी चट्टान का वह फलक या तल जो अत्यंत चिकना और न चुभने वाला हो। slick in side

शलथ वि. (तत्.) 1. थका हुआ 2. शिथिल 3. ढीला, बिखरा जैसे- शलथ बाल।

शलथन पुं. (तत्.) ढीला छोड़ना, शिथिल करना, बंधनमुक्त करना।

शलथांग वि. (तत्.) जिसके अंग ढीले पड़ चुके हो।

शलाघा स्त्री. (तत्.) 1. प्रशंसा, तारीफ, गुणगान 2. चापलूसी 3. अभिमान।

शलाघा-विपर्यय पुं. (तत्.) विनम्रता, निरहंकारिता, अभिमान शून्यता।

शलाघित वि. (तत्.) जिसकी प्रशंसा हो रही हो या हुई हो, प्रशंसित।

शलाघ्य वि. (तत्.) प्रशंसा के योग्य, प्रशंसनीय।

श्लिष्ट वि. (तत्.) 1. चिपका हुआ, सटा हुआ 2. आलिंगन किया हुआ, मिला हुआ 3. काव्य. ऐसा (प्रयोग) जिसमें अन्य अर्थ भी जुड़े हुए हो, श्लेषयुक्त।

श्लिष्टि स्त्री. (तत्.) श्लिष्ट होने का भाव, जुड़ाव, सटाव, आलिंगन।

श्लिष्टोक्ति स्त्री. (तत्.) समा. ऐसी बात (बोलना) जिसका स्पष्ट अर्थ न निकलता हो, जिसमें से नए नए अर्थ निकल रहे हों, द्वि-अर्थक बात। equi-vocalism

श्लीपद पुं. (तत्.) फाइलेरिया नामक सूत्रकृमि के संक्रमण से उत्पन्न विषाणुजन्य रोग जिसमें हाथ-पाँव फूलकर हाथी जैसे हो जाते हैं, फीलपाँव टि. इस रोग का वाहक मच्छर होता है।

श्लेष पुं. (तत्.) 1. चिपकने का भाव, जुड़ाव, आलिंगन काव्य. ऐसा वाक्य प्रयोग जिसके एक से अधिक अर्थ निकलते हों जैसे- चिर जीवों जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर, को घटि ए वृषभानुजा, ये हलधर के बीर। यहाँ वृषभानुजा और हलधर के अनेक अर्थ हैं वृषभानुजा= 1. वृषभानु की पुत्री 2. वृषभ (बैल) की अनुजा 3. वृष राशि के सूर्य की पुत्री, हलधर= 1. बलराम 2. बैल 3. शेष नाग के अवतार।

श्लेषक वि. (तत्.) श्लेष की क्रिया करने वाला, चिपकने वाला, चिपकाने वाला तु. विश्लेषक टि. 'विश्लेषक' का अर्थ विस्तृत है।

श्लेषण पुं. (तत्.) चिपकाना, आलिंगन, जोड़ना।

श्लेषवक्रोक्ति स्त्री. (तत्.) काव्य. वक्रोक्ति अलंकार का एक भेद जिसके अनुसार वक्ता के आशय को समझते हुए भी श्लेष के आधार पर दूसरा अर्थ निकालते हुए उत्तर दिया जाता है जैसे- 'को तुम?' 'हैं घनश्याम हम'। 'तो बरसो कितु जाय।' राधा के प्रश्न 'तुम कौन हो?' के उत्तर में कृष्ण कहते हैं 'मैं घनश्याम हूँ, राधा का उत्तर था 'तुम घनश्याम (काले बादल) हो तो कहीं जाकर बरसो, यहाँ क्यों आए हो?'।

श्लेषात्मक वि. (तत्.) श्लेष से युक्त (वाक्य), श्लिष्ट।

श्लेषोक्ति स्त्री. (तत्.) श्लेष से युक्त उक्ति।

श्लेष्म पुं. (तत्.) कफ, बलगम। दे. श्लेष्मा।

श्लेष्मनाल स्त्री. (तत्.) आयु. श्लेष्मग्रंथियों से उत्पन्न होने के बाद श्लेष्मा इकट्ठा होने का स्थान या नली, गले की नली

श्लेष्मा स्त्री. (तत्.) आयु. शरीर के अंगों में विद्यमान स्नेहक और संरक्षक लसीला द्रव जिसमें म्यूसिन, अकार्बनिक लवण, श्वेत रुधिर कणिकाएँ, उपकला कोशिकाएँ आदि निलंबित होती हैं।